53

औद्योगिक उत्पादकता

(कार्यकुशलता, अकुशलता, निम्न उत्पादन के कारण)

अभ्यास

❖ **बहुविकल्पीय प्रश्न**

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर के लिए पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ संख्या- 528 का अवलोकन कीजिए।

❖ **अतिलघुउत्तरीय प्रश्न**

अतिलघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर के लिए पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ संख्या- 529 का अवलोकन कीजिए।

❖ **लघुउत्तरीय प्रश्न**

1. औद्योगिक उत्पादकता की परिभाषा लिखिए।

उ०– औद्योगिक उत्पादकता की परिभाषा– विभिन्न विद्वानों ने औद्योगिक उत्पादकता को निम्नवत् परिभाषित किया है–

"उत्पादकता से आशय प्राय: उस अनुपात से लगाया जाता है, जोकि वस्तुओं और सेवाओं के रूप में धनोत्पादन और ऐसे उत्पादन में लगे उत्पादन के साधनों के बीच विद्यमान होता है।" **–एम० बनर्जी**

"औद्योगिक उत्पादकता से आशय उत्पादन की संपूर्ण निविष्टियों तथा उनके उत्पादन के अनुपात से लगाया जाता है।"

–लेखिका

एक समय विशेष में उत्पादन की संपूर्ण इकाइयों तथा उत्पादन के उपादानों के अनुपातिक अंश को उद्योग की उत्पादकता कहते हैं।

2. भारत में निम्न उत्पादकता के लिए उत्तरदायी तीन कारण लिखिए।

उ०– भारत में निम्न उत्पादकता के लिए उत्तरदायी तीन कारण निम्नलिखित हैं–

(i) भारत को दीर्घकाल तक विदेशी शासन को झेलना पड़ा था। विदेशी शासकों ने औद्योगिक विकास की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। अंग्रेज सरकार ने भारत को केवल कच्चे माल की मंडी के रूप में विकसित किया। अत: भारत औद्योगिक क्षेत्र में पिछड़ गया।

(ii) भारत में अधिकतर लोग निर्धन हैं, जो कोई बचत नहीं कर पाते। कतिपय पूँजीपति लोग अपनी पूँजी को उद्योगों में लगाने के बजाय सुरक्षित निवेशों, जैसे– संपत्ति, व्यापार, सरकारी बाँड आदि में लगाना पसंद करते हैं। इसलिए भारत में पूँजी का अभाव रहने के कारण औद्योगीकरण का स्तर पिछड़ा ही रहा है।

(iii) भारत में बड़े पैमाने के उद्योगों की स्थापना बहुत देर से हुई। हमारे उद्योग मशीन, औजार, इस्पात, रासायनिक सामान आदि के लिए विदेशों पर निर्भर रहे हैं। इसी कारण यहाँ औद्योगिक पिछड़ापन बना रहा।

3. औद्योगिक उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कारकों को संक्षेप में लिखिए।

उ०– औद्योगिक उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कारक– औद्योगिक उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कारक निम्न हैं–

(i) सुविकसित तकनीक,

(ii) पर्याप्त वित्त की उपलब्धता,

(iii) श्रेष्ठ प्रबंधन एवं व्यवस्था,

(iv) उत्पादन के उपादानों का श्रेष्ठ समन्वय,

(v) सरकार की उदार नीतियाँ,

(vi) प्राकृतिक व सामाजिक कारक।

4. भारत में औद्योगिक पिछड़ेपन के लिए उत्तरदायी कारण कौन-से हैं?

उ०– भारत में औद्योगिक पिछड़ेपन के लिए उत्तरदायी कारण निम्नलिखित हैं–

(i) विदेशी शासन (ii) पूँजी की कमी

(iii) भारी तथा आधारभूत उद्योगों का अभाव (iv) कुशल श्रमिकों की कमी

(v) सस्ते शक्ति साधनों का अभाव (vi) कुशल-प्रबंधकों की कमी

(vii) कच्चे माल की कमी (viii) निर्धनता

(ix) वित्तीय संगठनों का अभाव (x) योजना रहित विकास

(xi) परिवहन एवं संचार का कम विकास (xii) नव-प्रवृतकों एवं अनुसंधान की कमी

(xiii) आधुनिक मशीनों की कमी

5. भारत के औद्योगिक विकास की तीन उपलब्धियाँ लिखिए।

उ०– भारत के औद्योगिक विकास की तीन उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं–

(i) भारत में सुदृढ़ औद्योगिक अवसंरचना का तेजी से विकास हुआ है।

(ii) भारत तीव्र तथा संतुलित औद्योगिक विकास करने में सफल हुआ है।

(iii) भारत ने सार्वजनिक उपक्रमों का विकास करके निजी क्षेत्र को विकसित कर लिया है।

❖ **विस्तृत उत्तरीय प्रश्न**

1. औद्योगिक उत्पादकता क्या है? इसे कौन-कौन से कारक प्रभावित करते हैं?

उ०– औद्योगिक उत्पादकता का अर्थ– उत्पादन के विभिन्न साधनों की अनुपातिक उत्पादन की मात्रा को उत्पादकता कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, "निश्चित समय सीमा में उत्पादन के एक साधन द्वारा वस्तुओं और सेवाओं को उत्पन्न करने की क्षमता को ही औद्योगिक उत्पादकता का नाम दिया जाता है।" उत्पादकता को वस्तुओं और सेवाओं के माध्यम से अथवा मुद्रा के माध्यम से मापा जा सकता है। वस्तुओं और सेवाओं से मापी जाने वाली उत्पादकता को **भौतिक उत्पादकता** तथा मुद्रा से मापी जाने वाली उत्पादकता को **आय उत्पादकता** कहा जाता है। राष्ट्र में विद्यमान समस्त संसाधनों से प्राप्त होने वाली वस्तुओं और सेवाओं के अनुपात को औद्योगिक उत्पादकता का नाम दिया जाता है। भारत धीरे-धीरे अल्प औद्योगिक उत्पादकता के मकड़जाल से मुक्त होता जा रहा है।

औद्योगिक उतपादकता को प्रभावित करने वाले कारक- इसके लिए लघु उततरीय प्रश्न संख्या-3 के उत्तर का अवलोकन कीजिए।

2. औद्योगिक कार्यकुशलता से क्या आशय है? औद्योगिक कार्यकुशलता को प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।

उ०– औद्योगिक कार्यकुशलता का अर्थ– औद्योगिक कार्यकुशलता का सामान्य अर्थ किसी उपक्रम या इकाई के औद्योगिक उत्पादन में दक्ष होने से लगाया जाता है। दूसरे शब्दों, "औद्योगिक कार्यकुशलता से आशय किसी उपक्रम की उस उत्तम

स्थिति से होता है, जिसमें वह उपलब्ध साधनों से अधिकतम तथा श्रेष्ठ उत्पादन प्राप्त करता है।" किसी भी उपक्रम का लाभ उसकी कार्यकुशलता पर ही निर्भर करता है।

औद्योगिक कार्यकुशलता को प्रभावित करने वाले कारक– औद्योगिक कार्यकुशलता एक तुलनात्मक स्थिति है, जो निम्न कारकों से प्रभावित होती है–

(i) उत्पादन इकाई में श्रम जितना कुशल और प्रशिक्षित होगा, उसकी औद्योगिक कार्यकुशलता उतनी ही अधिक होगी।

(ii) जिन उत्पादन इकाइयों के पास वित्तीय संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं, उनकी औद्योगिक कार्यकुशलता ऊँची रहती है।

(iii) उच्च कोटि की प्रौद्योगिकी वह कारक है, जिसका उपयोग कर श्रम, पूँजी तथा प्रबंधन की उत्तम व्यवस्था करके औद्योगिक कार्यकुशलता का उच्च स्तर पाया जा सकता है।

3. भारत में औद्योगिक पिछड़ेपन के लिए कौन-कौन से कारण उत्तरदायी हैं? विस्तार से समझाइए।

उ०– भारत में औद्योगिक पिछड़ेपन के कारण– भारत में औद्योगिक विकास की गति बड़ी मंद रही है, जिससे राष्ट्र औद्योगिक पिछड़ेपन की समस्या से ग्रसित है। इसके लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी हैं–

(i) भारत को दीर्घकाल तक विदेशी शासन को झेलना पड़ा था। विदेशी शासकों ने औद्योगिक विकास की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। अंग्रेज सरकार ने भारत को केवल कच्चे माल की मंडी के रूप में विकसित किया। अतः भारत औद्योगिक क्षेत्र में पिछड़ गया।

(ii) भारत में अधिकतर लोग निर्धन हैं, जो कोई बचत नहीं कर पाते। कतिपय पूँजीपति लोग अपनी पूँजी को उद्योगों में लगाने के बजाय सुरक्षित निवेशों, जैसे– संपत्ति, व्यापार, सरकारी बाँड आदि में लगाना पसंद करते हैं। इसलिए भारत में पूँजी का अभाव रहने के कारण औद्योगीकरण का स्तर पिछड़ा ही रहा है।

(iii) भारत में बड़े पैमाने के उद्योगों की स्थापना बहुत देर से हुई। हमारे उद्योग मशीन, औजार, इस्पात, रासायनिक सामान आदि के लिए विदेशों पर निर्भर रहे हैं। इसी कारण यहाँ औद्योगिक पिछड़ापन बना रहा।

(iv) भारत में कोयला घटिया किस्म का मिलता है और इसके क्षेत्र कुछ ही प्रदेशों में केंद्रित हैं। खनिज तेल के लिए देश को आयात पर निर्भर रहना पड़ता है। बिजली का उत्पादन पर्याप्त नहीं है। इसीलिए भारत में ऊर्जा के संसाधन सीमित होने के कारण यहाँ औद्योगिक पिछड़ापन बना रहा।

(v) भारत का परंपरागत श्रम अकुशल है। कृषि कार्यों को छोड़कर निकला श्रम उद्योगों में काम करने के लिए प्रशिक्षण लेने के प्रयास नहीं करता, जिससे औद्योगिक पिछड़ापन दूर नहीं हो सका।

(vi) भारत में बड़े पैमाने के उद्योगों के लिए पर्याप्त तथा उत्तम किस्म का कच्चा माल सुलभ न हो पाने के कारण पर्याप्त तथा उत्तम उत्पादन नहीं हो पाता। अतः यहाँ औद्योगिक पिछड़ापन बना हुआ है।

(vii) भारत में परिवहन तथा संचार के साधनों का अल्प विकास होने के कारण औद्योगिक पिछड़ापन विद्यमान है।(viii) भारत में उद्योगों को नवीनतम विधियों तथा नवीन तकनीकों का लाभ न मिल पाने के कारण औद्योगिक उत्पादन पिछड़ा ही रहा है।

(ix) भारत में नए-नए आविष्कारों तथा अनुसंधानों का लाभ औद्योगिक क्षेत्र को न मिल पाने के कारण औद्योगिक पिछड़ापन पाया जाता है।

(x) भारत में असफल आर्थिक नियोजन, कुशल प्रबंधन की कमी, वित्तीय संगठनों के अभाव, जनसंख्या विस्फोट तथा कुछ सामाजिक कुरीतियों के कारण औद्योगिक पिछड़ापन पाया जाता है।

4. भारत के औद्योगिक पिछड़ेपन को दूर करने के उपायों को विस्तार से बताइए?

उ०– भारत में औद्योगिक पिछड़ेपन को दूर करने के उपाय– भारत में औद्योगिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए

निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं–

(i) भारतीय उद्योगों के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए विदेशी निवेश को आकर्षित किया जाए।

(ii) भारत में ऊर्जा के परंपरागत तथा गैर-परंपरागत साधनों; जैसे– जल विद्युत, ताप विद्युत तथा अणु विद्युत के साथ-साथ पवन ऊर्जा और सौर ऊर्जा का विकास कर औद्योगिक पिछड़ेपन को दूर किया जा सकता है।

(iii) भारत में सड़क, रेल तथा वायु परिवहन का कुशलतम विकास करके औद्योगिक पिछड़ेपन को दूर किया जा सकता है।

(iv) भारत में सार्वजनिक क्षेत्र को चुस्त-दुरूस्त तथा प्रशिक्षित बनाकर उसकी कार्यक्षमता में गुणात्मक सुधार लाकर औद्योगिक पिछड़ेपन को हटाया जा सकता है।

(v) भारत में आर्थिक उदारीकरण तथा वैश्वीकरण की नीतियों का अनुसरण करके औद्योगिक पिछड़ेपन के रोग से छुटकारा पाया जा सकता है।

(vi) भारत में वित्तीय संस्थाओं, औद्योगिक बैंकों तथा व्यापारिक बैंकों को उद्योगों को सस्ती दर पर वित्तीय सुविधाएँ देने की व्यवस्था कराकर औद्योगिक पिछड़ेपन से मुक्त हुआ जा सकता है।

(vii) भारत में निजी क्षेत्र को बढ़ावा देकर तथा औद्योगिक क्षेत्र में स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा जगाकर औद्योगिक पिछड़ेपन को समाप्त किया जा सकता है।

(viii) भारत में आधारभूत संरचना का मजबूत ढाँचा खड़ा करके, परिवहन, संचार के साधनों का विकास तथा विद्युत आपूर्ति में वृद्धि करके औद्योगिक पिछड़ेपन के कलंक को धोया जा सकता है।

(ix) भारतीय उद्योगों को नवीनतम स्वचालित मशीनें तथा नवीनतम तकनीकी उपलब्ध कराकर औद्योगिक पिछड़ेपन से मुक्ति दिलाई जा सकती है।

(x) भारत में कृषि उत्पादन में वृद्धि करके कृषि आधारित उद्योगों; जैसे– चीनी, कपड़ा, जूट, चाय आदि उद्योगों का विकास करके तथा प्राकृतिक संसाधनों का कुशलतम उपयोग करके औद्योगिक पिछड़ेपन से सदैव के लिए मुक्त हुआ जा सकता है।

5. भारत में औद्योगिक विकास की संभावनाओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– भारत में औद्योगिक विकास की संभावनाएँ– भारत में औद्योगिक विकास भले ही मंद गति से हुआ हो, फिर भी यहाँ औद्योगिक विकास की अत्यधिक संभावनाएँ विद्यमान हैं। इस संबंध में निम्नलिखित तथ्य उल्लेखनीय हैं–

(i) भारत के ग्रामीण अँचलों में कुटीर उद्योगों के विकास की पूर्ण संभावनाएँ विद्यमान हैं।

(ii) भारत में लघु उद्योगों के विकास के लिए पर्याप्त श्रम, पूँजी, कच्चा माल तथा ऊर्जा के संसाधन विद्यमान होने से, उनके विकास की पूर्ण संभावनाएँ हैं।

(iii) उद्योगों में श्रम की कार्यकुशलता से भारत में औद्योगिक उत्पादन बढ़ने की पूरी संभावनाएँ हैं।

(iv) भारत में तीव्र एवं संतुलित औद्योगिक विकास की गति बढ़ने से औद्योगिक पिछड़ापन समाप्त करने की पूरी-पूरी संभावनाएँ हैं।

(v) भारत में होने वाले नए-नए आविष्कार तथा अनुसंधान भारत को औद्योगिक क्षेत्र में सफल बनाने की पूर्ण संभावनाएँ रखते हैं।

(vi) भारत ने भारतीय उद्योगों के लिए विदेशी पूँजी निवेश के द्वार खोलकर इनके विकास की पूर्ण संभावनाएँ जुटा ली हैं।

(vii) भारत ने आधुनिक उद्योगों की स्थापना करके तथा उनमें नवीनतम तकनीकी का प्रयोग करके औद्योगिक विकास की सभी संभावनाएँ जुटा ली हैं।

(viii) भारत ने आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाकर बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए उद्योगों के द्वार खोलकर, औद्योगिक

विकास की संभावनाएँ जुटा ली हैं।

(ix) औद्योगिक विकास के कारण रोजगार के नए अवसर सृजित होने से राष्ट्र से बेरोजगारी और निर्धनता दूर होने की पूर्ण संभावनाएँ बन गई हैं।

(x) भारत में उद्योगों के साथ-साथ कृषि, व्यापार, वाणिज्य की उन्नति होने तथा समाज कल्याण बढ़ने की संभावनाएँ भी बन गई हैं।

❖ **प्रोजेक्ट कार्य**

अध्यापक की सहायता से विद्यार्थी स्वयं करें।